प्रातः क्लास ✕ 5-11-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। अभी रूहानी यात्रा को तो तुम बच्चे अच्छी तरह समझते हो। कोई भी हठयोग की यात्रा है नहीं। यह है याद। याद के लिये कोई भी तकलीफ की बात नहीं। बाप को याद करना इसमें कोई तकलीफ की बात नहीं हैं। बाप को याद करना इसमें कोई तकलीफ की बात नहीं हैं। यह क्लास है इसलिये सिर्फ कायदे से बैठना होता है। तुम तो बच्चे हो। बच्चों को पालना हो रही है। कौन सी पालना? अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना मिल रहा है। बाप को याद करने में कोई तकलीफ नहीं हैं। सिर्फ माया बुधि का योग तोड़ती हैं। वाकी भल बैठो कैसे भी। उनसे कोई याद का कनेक्शन नहीं। बहुत बच्चे हठयोग से 3-4 घंटे बैठते हैं, सारी रात भी बैठ जाते हैं। आगे तुम्हारी तो भट्ठी थी। वह बात और थी। वहां तुमको कोई धंधा-धोरी तो था नहीं। इसलिये यह सिखाया जाता था। अभी बाप कहते हैं तुम गृहस्थ व्यवहार में रहो। धंधा-धोरी आदि भी भल करो। कुछ भी काम-काज करते बाप को याद करना है। ऐसे भी नहीं कि अभी निरन्तर तुम याद कर सकते हो। नहीं। इस अवस्था में टाईम लगता है। अभी ही निरन्तर याद ठहर जाये तो कर्मातीत अवस्था हो जाये। बाप समझाते हैं बच्चे ड्रामा के प्लैन अनुसार अभी बाकी थोड़ा समय है। सारा हिसाब भी बुधि में रहता है। कहते हैं क्राईस्ट से 300 वर्ष पहले भारत ही था। उनको स्वर्ग कहा जाता था। अभी उन्हों की 2000 वर्ष भी पूरे होते हैं। तो 5000 वर्ष का हिसाब हो जाता है। देखा जाता है तुम्हारा सारा नाम विलायत से ही निकलेगा। क्योंकि उन्हों की बुधि फिर भी भारतवासियों से तीखी है। भारत में शान्ति भी वह मांगते हैं। भारतवासियों ने ही लाखों वर्ष देकर और सर्व-व्यापी का ज्ञान देकर सभी की बुधि बिगाड़ दी है। तमोप्रधान बन गये हैं। वह इतने तमोप्रधान नहीं बने हैं। उन्हों की बुधि तो बड़ी तीखी है। भारतवासियों से तो वह झट समझ जावेंगे। उन्हों का जब आवाज निकलेगा तब भारतवासी जागेंगे। क्योंकि भारतवासी एकदम घोर नींद में सोये हुये हैं। वह थोड़े सोये हुये हैं। आवाज उन्हों का अच्छा निकलेगा। विलायत से आये भी थे हमको कोई बताने पीस कैसे हो सकती है। क्योंकि बाप भी भारत में ही आते हैं। यह बात तो तुम बच्चे ही बता सकते हो। दुनिया में फिर से वह पीस कब और कैसे होगी तुम बच्चे जानते हो परन्तु किसको समझाने की वह ताकत नहीं हैं। विलायत वाले भल तुम्हारे म्युजियम आदि में आते हैं परन्तु समझाने की ताकत नहीं हैं। बाबा ने कहा था उन्हों को कैसे लिखकर देना चाहिए वह लिख कर आना। परन्तु कोई ने भी लिखा नहीं हैं। ज्ञान की प्राकाष्टा तो है नहीं। कलकत्ते में चान्स अच्छा मिला पर कोई ने भी कायदे सिर समझाया नहीं। तुम बच्चे तो जानते हो बरोबर पेराडाईज अथवा हेविन था। नई दुनिया में भारत पेराडाईज था। यह और कोई भी नहीं जानते। मनुष्यों की बुधि में यह बात हो बैठ गई है कि ईश्वर सर्वव्यापी है। और कल्प की आयु भी लाखों वर्ष कह दिया हैं। सबसे जास्ती पत्थर बुधि यह भारतवासी ही बने हैं। यह गीता शास्त्र आदि सभी हैं भक्ति मार्ग के। फिर भी यह सभी ऐसे ही बनेंगे। भल ड्रामा को जानते हो। परन्तु फिर भी बाप तो पुरुषार्थ कराते हैं। तुम बच्चे जानते हो विनाश हो जरूर होना ही है। बाप आये ही हैं नई दुनिया की स्थापना करने। तो यह खुशी की बात है ना। जब कोई बड़ा इम्तहान पास करते हैं तो अन्दर में खुशी होती है ना। हम पास कर यह जाकर बनेंगे। सारा मदार पढ़ाई पर है। तुम बच्चे जानते हो बरोबर हमको बाप पढ़ा कर यह बनाते हैं। बरोबर पेराडाईज, हेविन था। मनुष्य तो बिचारे बिल्कुल ही मुंझे हुये हैं। बेहद के बाप के पास जो ज्ञान है वह तुम बच्चों को दे रहे हैं। बाप की भी तुम महिमा करते हो ना। बाबा नालेजफुल है। फिर बिलीस फुल भी है। खजाना भी उनका फुल है। तुमको इतना साहुकार कौन बनाता है। तुम जानते हो। यहां तुम क्यों आये हो? यह वरसा पाने। अगर कोई की तन्दुरुस्ती अच्छी है परन्तु धन नहीं है तो धन बिगर क्या होगा। बैकुण्ठ में तुम्हारे पास बहुत धन रहता है। यहां जो जो साहुकार हैं उनको नशा रहता है k हमारे पास इतना धन है। यह बड़े2 कारखाने हैं। शरीर छोड़ा, खलास। तुम तो जानते हो हमको बाबा 21 जन्मों लिये इतना खजाना देदेते हैं। बाप खुद तो खजाने का मालिक नहीं बनते हैं। तुम बच्चों को मालिक बनाते हैं। यह भी तुम जानते

5-11-68

94

5-11-68

विश्व में शान्ति सो तो सिवायगाड पत्थर के कोई स्थापनकर न सके। सभी से फर्स्ट क्लास चित्र है यह त्रिमूर्ति गोले का। इस चक्र में हीसारा ज्ञान भरा हुआ है। परन्तु यह भी बहुत बड़ा होना चाहिए। इन में कितनी नालेज है। तुम्हारी कोई ऐसी बन्डरफुल चीज होगी तब वह भी समझेंगे इसमें जरूर कोई ऐसा राज है। चक्र तो इससे बहुत बड़ा बनाना पड़े। बच्चे छोटे-खिलौने बनाते हैं। वह बाबा को पसन्द नहीं आती। बाबा तो कहते हैं बड़े2 चित्र लगाओ। जो दूर से ही कोई पढ़ समझ सके। मनुष्य अटेन्शन बड़ी चीज पर ही देंगे। इसमें क्लीयर कर दिखाया हुआ है इस तरफ है कलियुग इस तरफ है सतयुग। बड़े2 चित्र होंगे तो मनुष्यों का अटेन्शन खेंचेगा। टूयरिस्ट भी देखे। समझेंगे वह भी अच्छी तरह से। यह भी जानते हैं क्राईस्ट से 3000 वर्ष पहले स्वर्ग था। भारतवासी तो कुछ भी नहीं जानते हैं। 5000 वर्ष का हिसाब तुम क्लीयर कर सुनाते हो। तो यह इतना बड़ा बनाना चाहिए जो कोई भी दूर से देख सके। और अक्षर भी पढ़े। और समझे की दुनिया का अन्त तो जरूर है, बम्स भी तैयार होते रहते हैं। नेचरल कैलेमिटिज भी होंगी। तुम विनाश का नाम सुनते हो तो अन्दर में खुशी बहुत होनी चाहिए। परन्तु ज्ञान ही नहीं होगा तो वह खुशी भी हो न सके। बाप कहते हैं देह सहित सभी कुछ छोड़ कर अपने को आत्मा समझो। अपने आत्मा का योग मुझ अपने बाप के साथ लगाओ। यह है मेहनत की बात। पावन बनकर ही पावन दुनिया में जाना है? तुम समझते हो हम ही बादशाही लेते हैं। फिर गवाते हैं। यह तो बहुत ही सहज है। उठते बैठते अन्दर में ज्ञान टपकना चाहिए। जैसे बाबा के पास भी ज्ञान है ना। बाप आये ही हैं पढ़ाकर देवता बनाने। तो इतनी अथाह खुशी बच्चों को रहनी चाहिए ना। अपने से पूछो इतनी अथाह खुशी है। बाप को इतना याद करते हैं। चक्र का भी सारा नालेज बुधि में है। तो इतनी खुशी रहनी चाहिए ना। बाप कहते हैं मुझे याद करो और बिल्कुल खुशी में रहो। तुमको पढ़ाने वाला देखो कौन है। जब सभी को मालूम पड़ेगा तो सभी का मुंह खुला हो जावेगा। परन्तु उन्हों को अभी समझने में देरी है। अभी देवता धर्म की इतनी भेम्बर्स तो बने नहीं हैं। सारी राजाई तो स्थापन हुई नहीं है। कितने ढेर मनुष्यों को बाप का पैगाम देना है। बेहद का बाप हमको फिर से स्वर्ग की बादशाही दे रहे हैं। तुम भी उस बाप को याद करो। बेहद का बाप तो जरूर बेहद का सुख देंगे ना। बच्चों की बुधि में तो अथाह ज्ञान की खुशी होनी चाहिए। और जितना2 बाप को याद करते रहेंगे तो आत्मा पवित्र बन जावेगी ड्रामा के प्लेन अनुसार। तुम बच्चे जितना सर्विस कर प्रजा बनाते हो जिनका कल्याण होता है उन्हों की फिर आशीर्वाद भी मिलती जाती है। गरीबों की सर्विस करते रहो, निमंत्रण देते रहो। ट्रेन में भी तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। इतनी छोटी बेज में ही कितनी नालेज भरी हुई है। सारी पढ़ाई का तन्त इनमें है। बेजेज तो बहुत अच्छे2 ढेर बनानी चाहिए। जो किस किसको सोगात भी दे सकें। कोई को भी समझाना तो बहुत ही सहज है। सिर्फ शिव बाबा को याद करो। शिव बाबा से यह वरसा मिलता है। तो बाप और बाप का वरसा स्वर्ग की बादशाही, कृष्ण पुरी को याद करो। मनुष्यों की मत तो कितनी मुंझी हुई है। कुछ भी समझते नहीं हैं। परन्तु कोई लज्जा कम थोड़े ही आती है। इस समय मनुष्य कितने पत्थर बुधि बन्दर बुधि बन पड़े हैं। जैसे कि कामी कुत्ते हैं। विकार के लिये कितना तंग करते हैं। काम के पिछाड़ी कितना मरते हैं। कोई बात ही नहीं समझते हैं। जैसे चर्यो की हास्पीटल होती है ना। जिसको मेन्टल हास्पीटल कहते हैं। इस समय यह सारी दुनिया बड़ी ते बड़ी मेन्टल हास्पीटल है। सभी की बुधि बिल्कुल जट हो गई है। बाप को जानते ही नहीं। यह भी ड्रामा में नूंध है। सभी की मेन्टल (बुधि) खलास हो गई है। बाप कहते हैं बच्चों तुम पवित्र बनो तो ऐसे स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। परन्तु समझते ही नहीं हैं। आत्मा की ताकत सारी निकल गई है। कितना समझाते हैं। तो भी समझते नहीं हैं। नशा नहीं चढ़ता। टाईम भी पड़ा है। फिक्रत की कोई बात नहीं है। फिर भी पुरुषार्थ करना और कराना है। पुरुषार्थ में थकना नहीं है। हार्ट फेल भी नहीं होता है। इतनी मेहनत के भाषण की, भाषण से एक भी नहीं निकला। नहीं। जिसने जो सुना है वह छापा लग जाता। पिछाड़ी में सभी जागेंगे जरूर। तब वह आकारियों की अथाह [illegible]

5-1-68

एक्टिविटी देखते हैं तो जैसे कि एकदम बेसमझ का। कोई रिगार्ड ही नहीं। पूरी पहचान ही नहीं। बुधि बाहर भटकती रहती है। बाप को याद करे तो मदद भी मिले। बाप को याद नहीं करते हैं तो गोया वह पतित हैं। तुम बनते हो पावन। फर्क देखो कितना है। बाप को खुद याद नहीं करते हैं उन्हों की बुधि जरूर कहां न कहां भटकती होगी। तेरे उनके साथ अंग से अंग न मिलना चाहिए। क्योंकि याद में न रहने कारण वह वायुमंडल को खराब कर देते हैं। पवित्र और अपवित्र इकट्ठे रह न सके। इसलिये बाप पुरानी सृष्टि को खलास कर देते हैं। दिन प्रति दिन कायदे भी कड़े निकलते जावेंगे। बाप को याद नहीं करते हैं तो कायदे बदली और ही नुकसान हो जाता है। पवित्रता का सारा मदार यादपर है। एक जगह बैठने की भी बात नहीं है। यहां इकट्ठा बैठने से तो अलग2 पहाड़ों पर जाकर बैठे वह अच्छा है। जो याद नहीं करते हैं वह हैं पतित। उनका तो संग ही छोड़ देना चाहिए। चलन से सब मालूम पड़ता है। याद बिगर पावन तो बन न सके। हरेक के ऊपर पापों का बोझा बहुत है जन्म जन्मांतर का। वह बिगर याद की यात्रा कैसे निकलेगी, तो गोया वह पतित ही हैं। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों के लिये सारी दुनिया को खलास कर देता हूं। उनका संग भी छोड़ देना चाहिए। परन्तु इतनी भी बुधि नहीं कि किसके साथ संग करना चाहिए। तुम्हारा प्यार पावन का पावन के साथ होना चाहिए। यह भी बुधि चाहिए ना। स्वीट बाप और स्वीट राजधानी के साथ योग हो और कोई की याद न हो। इतना सभी त्याग करना कोई मासी का घर नहीं है। बाप का तो बच्चों पर अथाह प्यार है। बच्चे पावन बन जाओ तो तुम पावन दुनिया के मालिक बन जावेंगे। हम तुम्हारे लिये पावन दुनिया स्थापन कर रहे हैं। इस पतित दुनिया को बिल्कुल ही खलास कर देते हैं। इस पतित दुनिया में तुमको हर चीज़ दुःख ही देते हैं। अरयु भी कमती होती जाती है। इनको कहा जाता है यथ नार्ट अपेनी। कौड़ी और हीरे में फर्क तो होता है ना। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। गया भी जाता है सच्च तो बिठो नच। तुम सतयुग में खुशी में डांस करते हो। यहां के कोई भी वस्तु से दिल नहीं लगानी है। इनको तो देखते हुये भी न देखना है। परन्तु वह हिम्मत अवश्य चाहिए। यह तो निश्चय है यह पुरानी दुनिया होगी ही नहीं। आंखें खुली हुई ऐसी होती है जैसे कि बन्द हो। इतना खुशी का पारा चढ़ा हुआ रहना चाहिए। हम अपनी राजधानी में जावेंगे। भक्ति मार्ग में भी भक्ति करते2 बुधि और तरफ चली जाती थी तो अपने को चपाट मारते थे। अभी बाप को याद नहीं किया जाता है तो क्या करना चाहिए। चुन्नी पहननी चाहिए। अगर हम शिव बाबा को याद करेंगे तो विश्व की बादशाही मिलेगी। हठयोग से भी बैठना न है। खाते-पीते काम करते बाप को याद करो। यह भी जानते हो राजधानी स्थापन हो रही है। बाप थोड़े ही कहेंगे कि दासी बने। बाप तो कहेंगे पुरुषार्थ कर पावन बनो। बाप पावन बनने का पुरुषार्थ कराते, तुम फिर पतित बनते हो। कितने झूठ पाप करते हो। हमेशा शिव बाबा को याद करते रहो। तो पाप सभी भस्म हो जाये।

5-1-68 पृ० 3

यह बाबा का यज्ञ है ना। बड़ा भारी यज्ञ है। वह लोग यज्ञ रचते हैं लाखों रुपया खर्चा करते हैं। यहां तो तुम जानते हो सारी दुनिया इनमें स्वाहा होनी है। भारत की बुधि बट खाते में है। बिल्कुल ही पत्थर बुधि। इसलिये बाहर में आवाज होगा। भारत में भी फैलेगा। एक तो बाप के साथ बुधि का योग हो तो पाप कटे। और फिर ऊंचपद भी मिले। बाप का तो फर्ज है बच्चों को पुरुषार्थ कराना। लौकिक बाप तो बच्चों की सेवा करे फिर सेवा लेते भी हैं। यह बात तो कहते हैं तुम सुखी हो ना। हमें सुखी होना नहीं है। मैं आता ही हूं तुम्हारे लिये ड्रामा अनुसार। तुम बच्चे जानते हो हमको 2। जन्मों का वरसा बाप देते हैं। उनको तो याद जरूर करना है। तो पाप कटे। बाकी पानी से थोड़े ही पाप कटनी है। पानी तो जहां तहां है। विलायत में भी नदियां हैं तो क्या यहां की ही नदियां पावन बनाने वाली है। विलायत की नदियां पावन बनाने वाली नहीं है क्या। कुछ भी मनुष्यों में समझ नहीं है। बाप से तो तरस पड़ता है ना। बाप समझाते हैं बच्चे गफलत मत करो। बाप इतना गुल2 बनाते हैं तो मेहनत करनी चाहिए ना। अपने पर रहम करना है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।